देवकीनंदन खत्री और 'चंद्रकांता'

डॉ. गोविन्द प्रसाद वर्मा
(सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी(बिहार)- 845401
Email: govindprasadverma@mgcub.ac.in

स्नातकोत्तर हिंदी, द्वितीय सेमेस्टर
प्रश्नपत्र: लोकप्रिय साहित्य और संस्कृति (HIND 4018)

विषय-सूची

- देवकीनंदन खत्री : जीवन परिचय एवं रचनाएँ
  - जीवन परिचय
  - रचनाएँ
- तिलस्म और ऐयार
- चंद्रकांता
  - कथ्य पक्ष
  - शिल्प पक्ष
- निष्कर्ष
- संदर्भ-ग्रंथ-सूची

❖ देवकीनंदन खत्री : जीवन परिचय एवं रचनाएँ

- **जीवन परिचय**

➢ देवकीनंदन खत्री का जन्म 18 जून, सन् 1861 ई. को मुजफ्फरपुर (बिहार) में हुआ, जो खत्री जी का ननिहाल था | उनके पिता का नाम ईश्वरदास था |

➢ उनके पूर्वज लाहौर निवासी थे | वे बाद में काशी चले आए और यहीं बस गये |

➢ उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू-फारसी में हुई और वे जब काशी आ गये, तब उन्होंने हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा का भी अध्ययन किया |

- गया (बिहार) जिले के टिकारी राज्य में आपकी पैतृक व्यापारिक कोठी थी | वहाँ के राजदरबार में आपकी बड़ी ही प्रतिष्ठा थी | वहाँ आप 24 वर्ष की आयु तक रहे |
- टिकारी राज्य का प्रबंध सरकारी हाथों में चले जाने के बाद, आप को भी काशी आना पड़ा |
- काशी नरेश की कृपा से आपको चकिया (उत्तर प्रदेश) और नौगढ़ (उत्तर प्रदेश) के जंगलों का ठेका मिला |
- देवकीनंदन खत्री अपने मित्रों के साथ लगातार कई-कई दिनों तक चकिया और नौगढ़ के बीहड़ जंगलों, पहाड़ियों तथा पुरानी ऐतिहासिक इमारतों के खंडहरों की खाक छानते रहे | सभवत: यहीं उनके रचनात्मक लेखन में अभिव्यक्त हुआ है |

- वे शक्ति के उपासक थे तथा तंत्र विद्या में गहरी रूचि रखते थे | उसके अलावा अनेक कौतुक वृतियों में भी गहरी दिलचस्पी रखते थे |
- खत्री जी उर्वर कल्पना और अच्छी स्मृति के धनी थे |
- उनके मित्र मंडली में - जगन्नाथदास रत्नाकर, बालमुकुंद गुप्त, हरिकृष्ण जौहर, किशोरीलाल गोस्वामी, रामकृष्ण वर्मा आदि प्रतिष्ठित साहित्यकार थे |
- देवकीनंदन खत्री की असामयिक मृत्यु 1 अगस्त, 1913 ई. को हो गयी |

रचनाएँ

- देवकीनंदन खत्री कवि, उपन्यासकार, और संपादक थे लेकिन उन्हें विशेष ख्याति उपन्यास के क्षेत्र में ही मिली | आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन ही है – " *पहले मौलिक उपन्यास लेखक जिनके उपन्यासों की सर्वसाधारण में धूम हुई, काशी के बाबू देवकीनंदन खत्री थे |*"

- उन्होंने 'उपन्यास लहरी' नामक मासिक पत्रिका निकाली और लहरी प्रेस की सन् 1898 ई. में स्थापना भी की |
- देवकीनंदन खत्री की निम्नलिखित प्रमुख रचनाएँ हैं –

रचना	प्रकाशन वर्ष (ईसवी में)
• चंद्रकांता	1888-1891
• नरेंद्र मोहिनी	1893
• कुसुम कुमारी	1894-1898
• चंद्रकांता संतति	1894-1905
• वीरेंद्र वीर (कटोरा भर खून)	1895
• काजर की कोठारी	1902
• भूतनाथ (भाग 1-6 तक)	1906-1912

- इसके अतिरिक्त उनकी रचनाओं में – 'लैला मजनूँ', 'गुप्त गोदना' की भी गिनती की जाती है | कुछ विद्वान् 'नवलखा हार' और 'अनूठी बेगम' को भी उन्हीं की रचना मानते हैं |

❖ तिलस्म और ऐयार

- देवकीनंदन खत्री हिंदी में तिलस्मी- ऐयारी उपन्यास के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं | ऐसे उपन्यास लिखने की प्रेरणा संभवतः उन्हें फैजी के 'दास्तान-ए-अमीर-हमजा' और 'तिलिस्म होशरुबा' से मिला था |
- हिंदी में 'तिलस्म' और 'ऐयार' शब्द दोनों अरबी भाषा से आए हैं, वैसे 'तिलस्म' मूल रूप से ग्रीक भाषा के 'टेलेस्मा' शव्द से बना है जिसका अर्थ तंत्र-मंत्र होता है |
- 'तिलस्म' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है- " *अद्भुत और आश्चर्यजनक कल्पना, संचित कोष की रक्षा के लिए नियत की गयी भयावनी शक्ल या दवाओं तथा लग्नों के मेल से बंधा हुआ यंत्र |" (मधुरेश)*

- ऐयार शब्द का सामान्य अर्थ होता है- चालाक, वेग से चलनेवाला, या दूर तक दौड़नेवाला | ऐयार चालाकी, दक्षता और क्षण में ही वेश परिवर्तन की असाधारण क्षमता से संपन्न माने जाते हैं | वे निजी आचार संहिता से बद्ध होते हैं | वे अपनी बुद्धि से युद्ध की अकारण हिंसा और रक्तपात से भी बचाने की क्षमता रखते हैं |

- देवकीनंदन खत्री ने स्वयं माना है कि 'ऐयारी' की परंपरा शुद्ध भारतीय है |

❖ चंद्रकांता*

- हिंदी उपन्यास के इतिहास में 'चंद्रकांता' का प्रकाशन एक युगांतकारी घटना है | जिसने उपन्यास के स्वरूप में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया |
- 'चंद्रकांता' को हिंदी का पहला तिलस्मी-ऐयारी उपन्यास होने का गौरव प्राप्त है |
- 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकांता संतति' पढ़ने के लिए न जाने कितने लोगों ने हिंदी सीखी | इसमें कोई संदेह नहीं कि इन उपन्यासों ने हिंदी का विशाल पाठक वर्ग तैयार किया |

कथ्य पक्ष

- 'चंद्रकांता' में नौगढ़ के राजा सुरेंद्र सिंह के पुत्र राजकुमार वीरेंद्र सिंह और विजयगढ़ के राजा जय सिंह की बेटी राजकुमारी चंद्रकांता की प्रेम कहानी है | इससे स्पष्ट है कि वीरेंद्र सिंह नायक और चंद्रकांता नायिका है |
- विजयगढ़ के दीवान के पुत्र क्रूर सिंह चंद्रकांता के प्रति आकर्षित है इसलिए उसे पाने के लिए अनेक तरह का षड़यंत्र रचता रहता है | वह नौगढ़ और विजयगढ़ में दुश्मनी पैदा करना चाहता है, लेकिन असफल हो जाता है और बाद में सुरेंद्र सिंह तथा जय सिंह एक हो जाते हैं | इस तरह वह इस उपन्यास का खलनायक है |
- क्रूर सिंह जब अपने उद्देश्य में किसी तरह कामयाब नहीं होता है , तब वह चुनारगढ़ के राजा शिवदत्त की सहायता लेता है जिससे वह भी प्रतिनायक की स्थिति में आ जाता है |
- नायक के सहयोगियों में जीत सिंह, तेज सिंह, देवी सिंह आदि जैसे ऐयार पात्र हैं और नायिका के साथ चपला एवं चंपा जैसी ऐयारा हैं |

- क्रूर सिंह और शिवदत्त के सहयोगियों में नाजिम, अहमद, पंडित बद्रीनाथ, पन्नालाल, जगन्नाथ ज्योतिषी आदि जैसे ऐयार पात्र है |

- चुनारगढ़ में एक तिलस्म है जिसमें राजकुमारी चंद्रकांता फँस जाती है | राजकुमार वीरेंद्र सिंह तमाम कठिनाइयों और विघ्न- बाधायों को पार करते हुए, अपने मित्रों की सहायता से तिलस्म को तोड़ देते हैं और राजकुमारी चंद्रकांता को मुक्त कराते हैं | उस तिलस्म से अकूत संपत्ति भी प्राप्त होती है |

- राजकुमार वीरेंद्र सिंह और राजकुमारी चंद्रकांता का विवाह होता है | इसके साथ ही तेज सिंह की चपला से और देवी सिंह की चंपा से भी विवाह हो जाता है | (ये दोनों युगल उपनायक-नायिका की भूमिका में भी है |)

- 'चंद्रकांता' मध्यकालीन रोमांस परंपरा का ही आधुनिक भाष्य है | यह मूलतः प्रेम कहानी है | 'चंद्रकांता' में प्रेम का जिस रूप में चित्रण किया गया है, उससे मध्यकाल के नायक का सहज ही स्मरण हो जाता है | नायक तमाम विघ्न- बाधाओं को पारकर अंततः नायिका को प्राप्त कर लेता है | यहाँ भी वैसी ही स्थिति है |

- नायक और नायिका दोनों एक-दूसरे के प्रेम में आहें भरते, रोते हुए, हिचिकियाँ भरते हुए अंकित किए गए हैं – "*हरदम चंद्रकांता की याद में सर झुकाए बैठे रहना और जब कभी निराला पाना तो चंद्रकांता की तस्वीर अपने सामने रखकर बातें किया करना या पलंग पर लेट मुँह ढँक खूब रोना, बस यही तो उनका काम था |*"
- उपन्यास में उपनायकों और उपनायिकाओं की प्रेम दशाओं का भी संकेत मिलता है, परंतु विस्तार कहीं भी दिखाई नहीं देता |
- 'चंद्रकांता' परंपरागत हिंदू नैतिकता और आचार संहिता को प्रतिष्ठित करता है | सुरेंद्र सिंह, जय सिंह, वीरेंद्र सिंह, प्रजावत्सल और आदर्श राजा हैं | ऐयारों का भी अपना नीतिशास्त्र है |
- कर्म सिद्धांत की इस मान्यता को दिखाया गया है कि –' अच्छे कर्मों का फल अच्छा और बुरे कर्मों का फल बुरा होता है |'
- लेखक की मान्यता है कि उपन्यास में वर्णित चमत्कार और मायावी घटनाएँ, वस्तुतः मानवीय बुद्धि से निसृत और नियंत्रित है |
- उपन्यास में मुसलमानों को खल पात्र के रूप में चित्रित किया गया है |

शिल्प पक्ष

- 'चंद्रकांता' उपन्यास में उत्सुकता और कौतुहल केंद्रीय सूत्र हैं | उत्सुकता की धार को पैना करने के लिए उपन्यासकार ने अपने कथा सूत्र को चरम सीमा तक ले जाकर अधूरा ही छोड़ देता है और फिर दूसरे कथा सूत्र को पकड़ लेता है | आगे बढ़ने के साथ-साथ सभी कथा-सूत्रों का खूबसूरत संयोजन भी करता चलता है |
- उपन्यास भले ही अपने समय के यथार्थ की सीधी अभिव्यक्ति न करता हो, लेकिन अपने पात्रों के माध्यम से गहरी रूचि और आत्मीयता पैदा करने में सफल होता है |
- उपन्यासकार ने रोचक और सहज भाषा की अभिव्यक्ति करते हुए चित्रात्मक शैली का सजीव चित्रण किया है | उपन्यास में जिस तरह से विविध प्रकार के वृक्षों, नालों, पहाड़ियों, खोहों, इमारतों आदि का चित्रण हुआ है, वे पाठक के मानस जगत में सहज ही चित्र उपस्थित कर देते हैं |
- उपन्यास में उर्दू-हिंदी मिश्रित भाषा का प्रयोग हुआ है | उनकी भाषा ऐसी है जिसको पढ़ने के लिए किसी कोश की आवश्यकता नहीं होती |

❖ निष्कर्ष

- हिंदी उपन्यास के इतिहास में 'चंद्रकांता' का प्रकाशन एक युगांतकारी घटना है | जिसने उपन्यास के स्वरूप में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया | 'चंद्रकांता' को हिंदी का पहला तिलस्मी-ऐयारी उपन्यास होने का गौरव भी प्राप्त है |
- चंद्रकांता' मध्यकालीन रोमांस परंपरा का ही आधुनिक भाष्य है | यह मूलतः प्रेम कहानी है |
- 'चंद्रकांता' परंपरागत हिंदू नैतिकता और आचार संहिता को प्रतिष्ठित करता है |
- कर्म सिद्धांत की इस मान्यता को दिखाया गया है कि –' अच्छे कर्मों का फल अच्छा और बुरे कर्मों का फल बुरा होता है |'
- उपन्यास में वर्णित चमत्कार और मायावी घटनाएँ, वस्तुतः मानवीय बुद्धि से निसृत और नियंत्रित हैं |
- 'चंद्रकांता' उपन्यास में उत्सुकता और कौतुहल केंद्रीय सूत्र हैं |
- उपन्यास में उर्दू-हिंदी मिश्रित भाषा और चित्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है |

❖ संदर्भ-ग्रंथ–सूची

- हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- चंद्रकांता : देवकीनंदन खत्री, लहरी बुक डिपो, वाराणसी
- हिंदी उपन्यास का इतिहास : गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- देवकीनंदन खत्री : मधुरेश, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
- हिंदी उपन्यास का विकास : मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद
- https://youtu.be/IRaA8sDY0xM (* इस लिंक से चंद्रकांता पर बना धारावाहिक भी देख सकते हैं |

धन्यवाद !